पयस्विनी

[निबद्ध मुक्तक काव्य]

श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन'

पयस्विनी

[निबद्ध मुक्तक काव्य]

रचयिता

श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन'

सुमन-प्रकाशन

मूल्य पाँच आना

प्रकाशक
मैथिली-मन्दिर
राजकुमारगंज : दरभङ्गा
१९८४-८५

मुद्रक
श्री भूपेन्द्र झा
मिथिला प्रेस
राजकुमारगंज : दरभङ्गा

भाव—भूमि—

मानवके कण्ठक वरदान भेटलैक तँ अभिशाप पछुऔने अयलैक पियासक । दृष्टिमे सृष्टि बिम्बित भेलैक तँ रूप-आकृतिक प्रतिबिम्बन पिण्ड नहि छोड़लकैक । श्रुति-पुटमे सङ्गीत गुञ्जित भेलैक तँ क्रन्दनक हाहाकार सेहो पुञ्जित होइत गेलैक । राका-रजनीक ज्योत्स्ना यदि पुलकित कयलकैक तँ अमा-तमीक सघन छाया सेहो कम्पित करैत रहलैक । जीवनक ई द्वन्द्वे, प्रसाद-विषादक ई स्पंदे, मानव मनके छंदक धंधा दय गेलैक ।

छन्दके यदि केओ कल्पना-कामिनीक नूपुरक मन्द-मधुर शिञ्जन बुझै छथि तँ हुनका उद्‌भट दंडकक घटाटोप टङ्कारो सुनय पड़तन्हि यदि मालिनी-शिखरिणीक कङ्कन-किङ्किनि सुनबामे रस अयतैन्हि तँ हठात् हुनका मन्दाक्रांता शार्दूलविक्रीडितक चरणचाप सुनबोक धैर्य सहेजय पड़तैन्हि । छन्दक द्रुत-विलम्बित गतिमे जीवनक सहज सङ्गति माननहि । प्रयोजन पड़ने पयस्'क श्लेषाश्लेष कयनहि ।

पय पानिओ थिक, दूधो थिक पयस्विनी बिन्दु--वाहिनी सरितो थिक, दुग्धधारिणी धेनुओ थिक पयोधर मुक्ताहार-श्रृङ्गारी--वम दूधक धार--उरोजो थिक, गगनबिहारी तृण-तृण जीवनसञ्चारी पावसी मेघो थिक । रुचि अछि, रसना जुड़ाउ--क्षुधा मेटाउ । शुचि अछि, आचमन-अवगाहन कय कालुष्य हटाउ--हृदयके शीतल बनाउ । 'यथेच्छसि तथा कुरु' ।

कविता सरिता जकाँ, अवश्य बहुत उँचाइसँ अवतरित होइछ, कवि-गिरिक गौरव-रहस्यसँ, निश्चय, कोनहु एकांत

प्रांतमे गलित होइछ। परञ्च ओ सार्थक बनैछ सामाजिक धरातलक सहज समतलमे। घन-पयोधर, सत्ते, दूर गगनमंडल मे उमड़ि अबैछ, परञ्च बरिसैछ जखन 'भूमि नियराये' भूतलमे, तखने ओ सर-सरिक रूपमे पुञ्जित प्रवाहित होइछ। संगहि पयस्विनी---चाहे ओ पार्वती रहओ वा पावसी--दूहुक वेग-गरिमा अतल प्रशांत सागरक महिमामे जखन लघिमा बनैछ तखने अपनाकें सार्थक करैछ तखने द्रुति गतिकें धन्य बनबैछ।

काव्य-साधनाक यैह थिक प्रथम एवं चरम भाव-भूमि।

—रचयिता

(आषाढस्य प्रथम दिवसे, १९७१)

'शांति वा सुरभिः स्योना कीलालोध्नी पयस्विनी।
भूमिरधि ब्रवीतु मे पृथिवी पयसा सह॥
- अथर्व, पृथ्वीसूक्त

[ने मरखाहि हराहि शुद्ध सुरभी सुरगवी समान।
थनक स्रोतसँ जकर बहय नित दूध अन्न-धन-धान॥
करय विशद उपदेश वत्सजनकें कय निःसन्देह।
वसुधा दुग्धवाहिनी जननी पियबथु पय सस्नेह॥]

... ...

'न केवलानां पयसां प्रसूतिम्' कालिदासस्य

'जप तप व्रत यम नियम अपारा : जे श्रुति कह शुभ धर्म अचारा
तेइ तृन हरित चरै जब जाई : भाव बच्छ शिशु पाइ पेन्हाई
नोइ निवृत्ति पात्र बिश्वासा : निर्मल मन अहीर निज दासा
परम धर्ममय पय दुहि भाई : अँवटै अमल अकाम बनाई
- तुलसी

या शिल्पशास्त्रादि पयो महार्ह सन्दुह्यते योजित-बुद्धि-वत्सैः।
वैज्ञानिकैर्विश्वहिताय शश्वत् तां भारतीं कामदुघामुपासे॥
- रामावतारशर्मणः

मैथिली-विभूति कवि विभूतिकें
सादर समर्पण

विधि - हरि हर क त्रिमूर्ति, सृष्टि - पालन - संहारण
पुनि प्रसाद - माधुर्य - ओज गुण क्रम निर्धारण
सूर्य, चन्द्र ओ अनल, सदाशिव विदित त्रिलोचन
मातृ - गिरा क नवोत्थान क आधार - शिला घन
कविवर, कविशेखर विदित, भोलालाल अमोल जे
जेठ ठेठ गुन, तत्सम क सगुन अभय गुन, घोल से

कविवर दैवज्ञवर प. सीतारामझा

अम्ब - चरित अवलम्ब कवित कत विषय ललितगर
भाषा प्राकृत प्रकृति - मधुर निर्मल स्वर निर्झर
सूक्ति - सुधा, वसुधा क कम्प, उनटा बसात बहि
लोक - लक्षणो विलक्षणे, शिक्षा क कथा कहि
जतरा सगुन विचार कत अतिचार क कर आन के ?
ज्योतिष कवित प्रमान के ? सीताराम समान के ?

गुरुवर 'कविशेखर' प. बदरीनाथझा

आर्या - साहस्री भार्या कत जनि श्रीकृष्ण क
राधा - परिणय बाधा हरि मन पुरल सतृष्ण क
एकावली ललित रचना परिणय घटना शुचि
मैथिली क गर पहिराओल मनि रतन ग्रथन रुचि
गुरुवर कविशेखर शिखर बुद्धि वयस यश वृद्ध जे
सुरसरस्वती - मैथिली कवि सुकृती रससिद्ध जे

मातृभाषैकप्राण बाबू भोलालाल दास

जनिका नहि परवाहि - आहि, क्यौ कहौ बताहो
मैथिली क हित लड़बे उचित पहिरि सन्नाहो
जे विधान - विद्वान, सुकवि, सम्पादक, वक्ता
उभय भारती मिथिला हित नित जे अधिवक्ता
दास मैथिलि क लाल छथि जे अमोल भोला भला
माथ मातृभाषा क नहि झुकओ, कटओ बरु निज गला

शीर्ष-बिन्दु

[भाव-भूमि भारतकी, समरंच (त्रिमूर्ति) बंगसे]

पावस पयस्विनी

चित चेति चैत तव लखि विशाल,
चरि चर-चाँचर जगतीक लाल।
जेठहु ठुट्टे नहि ठाढ़ि—पात,
निःशेष हरिअरी चारु कात॥

भूखक भाफें हँफइत जरइत,
किछु चरी गगन-गिरि दिस बुझइत।
नव-नव वनवाध क लय उदेश,
उद्ग्रीव बढ़लि सभ दिशा देश।

... ...

सित आसित नील मेघक धूमिल
धूसर भास्वर कत रंग रूप।
छपइत व्योमक पथ पसरि धवल,
चपला क पुच्छ चञ्चल अनूप

बनपथ-अतीत गिरि-शृङ्ग सिघ,
अछि पुलकित रोम कदम्ब अंग।
आषाढ़, जेठ, साओन, भादव,
अछि चरण चारि लागल कादव॥

थन आर्द्र पुनर्वसु पुष्ट श्लिष्ट,
अछि मघा घोघ, पूर्वा अशिष्ट।

रोमन्थ उत्तरा, हस्त हास,
चरती जा, धरि कास क विकास ॥

छापल पच्छिम, दखले दच्छिन,
उत्तर उतरल पूबहुँ पसरल ।
फिरइत दिगन्त, चलइत अनन्त,
नभ-कानन परिसर चरय हन्त ॥

पवमान देखि दिनमान छपित,
अनुमानि साँझ, बुझि समय शमित ।
बढ़इत अन्हार, राति क पछाति,
चौकल उछिन्न घन धेनु पाँति ॥

चरवाह हवा उचिते झटकल,
झंझा झोंके झटपट समटल ।
अटपट सन जे छल अवंड,
बरजल तकरा लय तडित-दण्ड ॥

सब चललि झटकि हुँकड़ैत झुण्ड,
झुकि-झुकि झोंकें सहसा सशङ्क ।
गति-अतिरेकेँ खुर-रज प्रचण्ड,
उड़ि चलल बलाका-कण अखण्ड ॥

हरिहर कचोर नभ ओर छोर,
गोचर चरइत, क्रम-क्रम बढ़इत ।

क्षितिज क दिस ससरल आबि रहल,
चञ्चल गतिएँ हुलसल फुलसल ॥

तृण तरु वन छनछन विकल विमन,
मन पड़ले प्यासल बत्स अपन ॥
वात्सल्य भरल रस सँ उमड़ल,
हुँकड़ैत पन्हायल पय उछलल ।
टप-टप चुबइछ दूध क धारा
जीवनमय उज्ज्वल शुचि-सारा ॥

ई नेह-बिन्दु थिक अमृत सिंधु,
वत्सलता - रजनी रजत - इन्दु ।
रस सँ भरते अग - जग सागर,
डाबर डाबा, सरिता गागर ।
झरतै नवनीते शिला - खण्ड,
घृत भरतै खेत - पथार कुण्ड ।
जमते हिम - दधि गिरि शिखर - शिखर,
मन - वन हरिअर पावस परिसर ।

पुनि तृप्त तृषित जगती - रसना,
शस्य क प्रशस्यता घर - अङना ।
जननी धन - धेनु क धन्य हृदय,
जय-जय पावस पयस्विनी जय ॥



पावसी : तामसी

[रस-चित्र]

१ (हास्य)-अति अन्धकार घन घोर घटा,
कखनहु छिटकय बिजुरीक छटा ।
गम्भीर अभिनय क दृश्य हटा,
हँसबैछ हँसैछ जेना विपटा ॥

२ (करुण)—मेघ क भरि आयल नयन-कोर,
टप-टप अकास सँ खसय नोर ।
ठनका क ठनक हिचकी अथोर,
कनबैछ कनैछ निशीथ घोर ॥

३ (रौद्र)—सन-सन पुरिबा बहि रहल जोर,
झाँट क डाँटब अछि विषम रोर ।
अपराध ककर, कत दण्ड घोर,
तमतम तमसायब तम क जोर ॥

४ (भयानक)-वन-वन तरु-तरु कम्पित अधीर,
थर-थर काँपय सरिता क नीर ।
बेहोस खसय तट माटि भीड़,
डेरबैछ प्रकृति डेरबुक अधीर ॥

५ (वीभत्स)–पिचपिच सब थल मन भिनकि रहल,
चाली सहसह पद पिचकि रहल।
गलि-पचि खढ़-पातो गम्हा रहल,
बरिसात राति-दिन घिना रहल॥

६ (वीर)—रण-थल निशीथ, तम-दल विपक्ष,
तडित क इजोत लड़इछ समक्ष,
छन तिमिर जोर, खन बढ़ इजोर,
जय-पराजय क नहि ओर-छोर॥

७ (शृङ्गार)–वन गृह मे बसि की रति रहस्य,
चन्द्रिका चन्द्र सङ सोझरबैछ?
प्रेम क पवन क झोंकें नभ घन-
खिड़की खुजि झाँकी झलकबैछ॥

८ (अद्भुत)- खन सूची-बेधित अन्धकार,
जगमगा गेल झट तडित तार!
खन घन-पट पसरल समटि देल,
जादूगर पवन पसारि खेल!!

९ (शान्त) विकसित होयत जखनहि प्रभात,
सिहकय लागत मलय क बसात।
तिमिर क परदा कें चीरि उदित,
सत रविक किरण अगजग द्योतित॥

पावस : मृत्युंजय
[वलिदानी चरित्र]

छल वसु - संपत्ति जते सञ्चित,
धरती माता कें कय अर्पित,
नहि राखल किछुओ सलिल शेष,
घन निर्मल अम्बर मात्र वेश।

वलिदानी दानी दिव्य जलद,
गलि स्वयं लोकहित सिद्ध बलद,
जनि' रक्त-सिक्त सुजला सुफला,
श्यामल धरणी जननी सबला।

कयलन्हि जगतक उत्ताप नाश,
नित तन अर्पण करइत सहास,
सहि सहज चण्ड आतप प्रहार,
जग कें देलन्हि छायोपहार ॥

तपन क कठोर कत दमन सहल,
पवन क झकोर कत जोर बहल,
कत उषम उमस, कत पवन दमस,
सहि सहि जग कें कय सकय सरस,

जग कें सजीव कय, जीवन दय,
आन क हित निज तन मन बलि कय,
वलिदानी पावस मृत्युञ्जय,
मरि कय पाओल अमृत क परिचय ॥

सरिता : रसन्वती

कलकल छलछल उच्छल उज्ज्वल
रूपवती के जाइछ ?
अवनी - तल निम्नोन्नत यदपि
न गति वेगेँ भसिआइछ !!
उभय कूल मर्यादित रहितहुँ
वेगवती द्रुत - गमना !
दिवा - निशा दुहु दिशा अभिसरण
निपुण बेशिनी ललना !!
निभृत निकुञ्ज दूरतम प्रियतम
नीर नील घन - श्याम !
की तनिकहि तकबा क उदेसेँ
चललि प्रेम उद्दाम ?
तट - नितम्बिनी मोड़ि - मोड़ि
कटि-देश; नृत्य रस निपुणा ।
कल - कल गीत गबैत
नचैत कछैत सतत द्रुतचरणा ॥

ताल तरङ्ग सङ्ग पुरइछ
तट - तरु खग वीणा सङ्गत ।
अनुरागिणी रागिणी गबइछ.
करइछ छवि नव रङ्गत ।।

आवर्तक भ्रू - भङ्गिमा क
अभिनय संकेत विधान ।
लहरि क लहरा पर नचइत
अबइछ ई नटी प्रमान ।।

कल - कल शब्द अलंकृत झंकृत
गुणमय रीति विलक्षण ।
भाव गभीर नीर अवगाहक
भावुक उर हर तत्क्षण ।।

ध्वनि रञ्जित, पद-पद विलक्षणा
संकेतें अभिधावित ।
अनुभाविनी भाव सञ्चारिनि
सत् शिवत्व दिस भावित ।।

गति स्वच्छन्द अमन्द तरङ्गिनि
कवि - उर अजिर स्रवन्ती ।
राशि राशि सौन्दर्य प्रवाहित
बिन्दु - बिन्दु रसवन्ती ।।

सरिता : वनिता

सरिते !
वहइत कतय चललि छी ?
प्रिय क खोज मे विकलि गललि छी !
वन-वन घुमइत,
पथ-पथ हेरइत,
गिरि-पाहन क रोष नहि गनइत,
घर - चाँचर अनुरोध न सुनइत ।
कल कल ध्वनिए करी पुछारी—
कतय हमर निधि हृदय बिहारी !

छोड़ि-छाड़ि घर परिजन अविरत,
पतिव्रते ! तप निरत निरन्तर,
प्रिय छथि प्रतिबिम्बित अभ्यन्तर,
मन क प्रभाव निरन्तर अन्तर ।

लहरि लहरि मे बिन्दु बिन्दु मे,
द्रवित अहँक उर मिलन-सिन्धु मे
बनि वनिता, जीवन सहचारी,
तकइत घूमि रहल सुकुमारी ॥

॥ पयस्विनी ॥

तपस्विनी वर वरण अनंन्या,
रूप वयस रति-रस लावन्या ।
मुनि वचनें, तनु रचनें धन्या,
रुद्रक उर-तल मरु-थल कें को
प्लावित करबे प्रेम क वन्या ?
धनि धनि पुनमति, पर्वत कन्या !

सत्यवंत सिंधुक चिर-संगिनि,
सावित्री क चरित्र प्रसंगिनि,
दमयन्ती पति - वरण पुनीता,
वनिता वनकन्या धनि सरिता !
वनवासिनि प्रवासिनी सीता,
प्रेम योगिनी वा ब्रजवनिता !
युग-युग सञ्चित अन्तर ज्वाला–
विश्व क व्यथा द्रवित गिरिबाला ।

जल प्रवाह नहि, बहइछ नोर,
कल-कल स्वर नहि हिचकी जोर,
तट नहि खसय हृदय हहरैछ,
सरिता वनिता विकल कनैछ ।

सरिते, वनिते !
जीवन भरि की विश्व वेदना सँ,
अहँ रहवे कनिते !

सरिता : कविता

'सरिते !

थम्हू कने, छने अहाँ,

विरमि एतय लेब ।'

कविते !

चलू सङ्गे, एके रङ्गे,

बिलमय न देब ॥'

× × × ×

ककरहु उर देश सँ दुहु क भेल जन्म,
प्रकृति कोर खेलि बुझल दुहू नेह नर्म ।
रस क कत तरंग, अंग - अंग मे उमंग,
जीवनमय यौवनमय इंगित अनंग,

दुहुक रसिक प्रेम - धनिक दूर अज्ञात,
असह विरहु उमस सिक्त दुहुक मृदुल गात ।

चंचल दृगंचल दुहु क सतत सजल कोर,
अंचल मे वेदना क खोंछि भरल नोर।
गिरिक कविक अन्तस्तल द्रवित पघिलि बहली,
ककरहु उर-देश करय उर्वर दुहु चलली।

रस मे, धुनि मे समान,
शीतलता मे प्रमान,
अभिशापित जगती क लेल दुहू बरदान।

तन दुइ, मन एक मात्र,
प्राण रस क युगल पात्र,
शब्द अर्थ सन अभिन्न,
सीता राधा न भिन्न,
बिम्ब प्रतिबिम्ब रीति,
सरिता कविता क प्रीति,

सरिते कविता थिकी,
कविते सरिता थिकी।



घन : तमाल

कानन वन बिच तरु तमाल हे! चतरि सघन वन सहृदय
तबधल जे मन प्राण जगत केर जुड़ा जाउ छाहरि कय
तपन ताप सँ उजड़ि उपटि कत विटप शरण केर अर्थी
आकुल कण्ठ गोहारि रहल, हे सुजन, स्वजन अन्वर्थी।।
उमड़ि आउ, घन धुनि सुनाउ पुनि
घहड़ि घुमड़ि घन घोर।
आश्वास क आशा — विश्वास
जगाउ, सहेजि सङोर
कत दिन ग्रीष्म क उष्मता क ई चलत अचल उत्पाते।
पड़त प्रचण्ड किरण मार्तण्ड क कते क्रूर आघाते।।
दुसह पसाही दावानल क करत कत वन क निपाते।
बहइत रहत कि चिर-कालहु धरि दुर्वह दहन बसाते।
अहह! असह दुख देखि वारि-दृग
वारिद? बरसिअ वारि।
अब्द, निरब्द नभहु जुमि झमकिअ
तमकि तडित तरुआरि।।
बरिसओ बुन्द वाण अविरत, डुबवओ दिग् विदिग् अखण्ड
आखण्डल क धनुष टंकारें हो अखण्ड भू-खण्ड
चमकओ तडित-खड्ग द्रुत गतिएँ पीत रक्त उद्दण्ड।
नील ढाल घन सघन घुमओ उद्वर्तित निज-भुज दण्ड।।

बज्री ! वज्र खसाउ, आउ
अरि - उर कम्पन - निष्णात ।
करइत चिर कठोर उद्धत गिरि-
शिखर उपर अभिघात ॥

उमड़ि घुमड़ि रस बरषि हरषि बसबिअ अहँ अवनी श्याम।
पुनि निरन्न परती केँ धरती रचिअ भूरि घन धाम ॥
सर-सरि रेखा मात्र, भरिअ रस - रंग प्रेम उद्दाम ।
मन-मयूर केँ नचबिअ, सजबिअ वन कदम्ब-अभिराम ॥

रिक्त - तिक्त ब्रज वन, कालिन्दी-
कूल न तूल - कलाम ।
आबि, आइ पुनि पुण्य श्याम घन !
बनाविअ ललित ललाम ॥

पुनि अम्बर वन मेघेँ मेदुर तनओ तमाल क छाया ।
पुनि घर-आङन गृह-गोसाउनिक अनुगत गति तुअ पाया
समय सोर पर बर्षओ पुनि पर्यन्य, धान्य धन धन्या ।
पुनि मरु-सिकता कन-कन मालव उर्वर सस्य अनन्या ॥

गगन वन क पुनि तरु तमाल तलि
रचि दल नवल वितान ।
श्यामा अवनि, श्याम घन अनुखन
मिलओ कलित कल्याण ॥

प्रिया ओ : प्रेयसी

ओ प्रिया, तों प्रेयसी !
ओ तुनुक सुषमा तन क श्री, तों मन क नित श्रेयसो !
ओ प्रिया, तों प्रेयसी !

ओकर भ्रू-भंगी क केवल,
मानस क मृग विकल चंचल !
तोहर सरिता लहरि लहराइत ललित मृदु मानसी !
ओ प्रिया, तों प्रेयसी !

चटुल ओकरहु नयन अंचल,
तोहर खंजन मोन चंचल !
गोर गोल कपोल, किन्तु उषा क लाली आतशी !
ओ प्रिया, तों प्रेयसी !

ओकर अधर क रक्तिमा पर,
दन्त मुक्ता रजत उज्ज्वल !
तोहर अरुण प्रभात पर दिवस क प्रकाश क आरसी
ओ प्रिया, तों प्रेयसी !

ओकर हास क शुभ्र रेखा,
कत तोहर शुचि चन्द्र-लेखा !
टिकुलि टिमटिम तोहर, नखत अनंत जगमग शिशु शशी
ओ प्रिया तों प्रेयसी !

बेणि श्यामल कुसुम गुंफित,
जलद-माला तड़ित चुंबित।
अलक आकुल वदन, अनुखन, सघन झँपइत बिधु हँसी।
ओ प्रिया, तों प्रेयसी!

ओकर नव परिधान धानी,
शस्य-श्यामल वन वनानी।
ओकर स्वर्णाभरण, कुसमाकर तोहर सुरभित रसी।
ओ प्रिया, तों प्रेयसी!

बोल मधु-माखल प्रिया केर,
रस भरल सुर कोकिला केर।
नूपुरक रव कतय पाओत, मंजु अलि-गुंजन यशी ?
ओ प्रिया, तों प्रेयसी !

ओ प्रिया रुचि-अनुचरी,
तों प्रकृतिप्रेयसि ! सहचरी
ओकर परिणय उपायन लय, तोहर नित प्रणयक वशी।
ओ प्रिया, तों प्रेयसी !

मानव-मन

चञ्चल लहरी, चञ्चल बिजुरी
ताहू सँ चञ्चल मानव - मन
प्यासल मरु-सिकता-कण अनन्त
ताहू सँ तबधल तृषित नयन

विस्तृत बारिधि केँ भरथु-पुरथु
सरिता शत-शत कलकल बहइत
भरि सकत अरे ! के रिक्त मानव क
उर - परिखा लघुतमहु अमित

अम्बरक तिमिरकेँ हर'क हेतु
रवि, शशि, अनन्त नक्षत्र व्यस्त
अन्तरक तामसी घनीभूत
जे हरत ज्योति से अति दुरस्त

कय लेल आचमन सागर सँ
नहि हमर अगस्त्यक तृषा दूर
वलि छलि धापेँ नापल जगती
ने भेल बामनी भीख पूर

पसरल दावानल पीबि व्रज क
विहरथु गुञ्जामाली किशोर
उर दाही गरल घोंठ पचवथि
से कतहु मदन - मर्दन अघोर

अधरक वसन्त, लोचनक शरद,
श्रुति धन-धुनिएँ ऋतु-ऋतु रंजित
अछिहे, परन्तु अन्तरक भूमि
ग्रीष्मक ज्वालें जरि-जरि वंचित ॥

... ...

गलइछ मित हिम बिन्दु-बिन्दु
घन परिणत होइछ सतत सिन्धु
पूर्णिमा अमा-गत क्षीण इन्दु
संघर्ष अन्तरक की निरवधि ?

वहिरंग भ्रमित की कण रोधित
उद्धत गति अन्तरिक्ष रोधित
विज्ञानक महाशक्ति वोधित
की करत न अन्त शान्ति-बोषित ?

झंझा वेगी वेगी निर्झर
ताहू सँ वेगी, मानव मन
चंचल लहरी, चंचल बिजुरी,
ताहूसँ चंचल मानव मन

दीपक : एकाकी

एकाकी के अहँ बरनिहार !
सम्पूर्ण स्नेह सँ जीवन भरि
तिल-तिल कय के अहँ जरनिहार !

नहि देखि रहल छी जे तम-दल
अछि घेरि चलल चौदिस नभ-तल
अस्तमित भानु भय सँ विह्वल
शशि दूर पड़ाय अकास बसल
पुनि अहाँ क्षीणतम ज्योति-बले
की बुझि युग-युग सँ अड़निहार
एकाकी के अहँ बरनिहार ?

छथि कोटि-कोटि नक्षत्र ठाढ़
अछि जनिक ज्योति सँ नभ सिङार
सभ क्यौ तटस्थ, सभ क्यौ उदास
नहि ककरहु उर साहस उदार
की सोचि विपथ दिस चलनिहार !
एकाकी के अहँ बरनिहार ?

माटि क शरोर, बाति क उर बल
अछि बिन्दु मात्र स्नेह क संवल
नहि शीशक रक्षा-यन्त्र सबल
लघु जीवन, लघु-लघु शिखा चपल

पल-पल प्रवात पुनि बहनिहार !
एकाकी के अहँ बरनिहार ?

खटितहुँ पल-पल, जरितहुँ कलबल
कय सकब कुटीरहि धरि प्रकाश
होइतहि निशान्त सभ मिझा देत
केवल शिखा क कलुषोपहास

बुझितहुँ विनाश दिस बढ़तिहार !
एकाकी के अहँ बरनिहार ?

ई उत्साही सहचर पतंग
जे जरय अंग बनि अहँक संग
तकरहु बिनाश केर मूल हेतु
बनि अयश मात्र होइछ अभंग

आदर्शवाद पर मरनिहार !
एकाकी के अहँ बरनिहार ?

वन : पर्व

हम चलब नगर केर पार
गाम सँ दूरे।
अछि बसल वन क सीमा
सुषमा सँ पूरे॥
नें धवल महल, नें भीत-
टाट केर घेरा।
अछि जतय मुक्त प्रकृति क
युग-युग सँ डेरा॥
नहि कल-करखाना, हर-
फारक तैयारी।
तरु लता गुल्म जत
बनल रहय भंडारी॥
नें नल-पानि क, नें कूप-
पोखरि क आशा।
झरि झरि झरने नित मेटय
सभ क पिपासा॥

ने सभा - समिति, ने
पर-पंच क स्वर दंगल ।
जत सुनी विहंग क
कल-कूजन श्रुति-मंगल ॥

ने मनुज - दनुज, ने
जन नेता, प्रभु - सेवक ।
ने वर्ग - द्वन्द्व, अन्त्यज-
द्विज, शोषित - शोषक ॥

जत बाघ अछैत, नचैत
हरिण - दल देखी ।
चानन के घृणा न
गन्हपसारि सँ लेखी ॥

गाछो अछि, तँ खढ़ - पातो
संग जुड़ाइछ ।
काको अछि तँ कोइली क
कुहू ने हेराइछ ॥

जत आम नीम, जूही-
जवास, दल काँटो ।
लघु लता, महावट,
लंब ताल, तृण नाटो ॥

दुर्गम पथ रथ न, तथापि
कतहु गति - रोध न ।
संस्था-संस्थान न शोध
तदपि उद्‌बोधन ॥
कृत–विकृत कुराम - पुरान,
पुरा नव बेदहु ।
जत विविधता क एकता
रसा रस - भेदहु ॥
नगर क रामें, गाम क
द्वेषें अकछाइछ ।
निर्द्वेष - राग वन दिस
मन पुनि अकुलाइछ ॥
हम चलब वन क दिस
सत्य सनातन बासे ।
नें जायब सुतय पताल,
न उड़य अकासे ॥

कानन

[वचन : प्रतिवचन]

"कानन ! आउ, अहँक आनन पर
चानन हम छिटका दी।
मलिन वदन धो - पोछि,
केश बिखरल बिथुल, छटवा दी॥
वास-भूमि अछि ऊभड़-खावड़,
बेउड़ेब घर - आङन।
निधिन - सनक अछि घर-परिसर,
मन अछि तकरा चमका दी॥
कोस-कोस कुश कास बाँस पुनि
कते अपरिचित तृण - तरु।
लता-गुल्म, जनि' नाम कोष धरि
लिखल न, से कटबा दी॥
लगबा दी मङाय केसर
गुलाब केओला कचनारो।
कत विध रूप-रंग रंजित
मङबाय सागर क पारो॥

वन - बिहंग उड़बाय, कानुली
बुलबुल कागा - सूआ ।
बेर - बेढ़ हित छड़ - बलछड़;
बेष्टनी शिष्ट अनतूआ ॥

सड़क क तड़क - भड़क, ट्रक बस कत
चलत सतत आङ्गन मे ।
नगर सगर बसि, सरस करत नित
कत कलकल कानन मे ॥

किछु छाँटब, आँटब, किछु काटब,
प्रयोजनी जत काज ।
रन्धन – इन्धन ब्यर्थ, अर्थ
गृह – आलय सज्जा साज ॥"

... ...

"हम प्रकृति क सन्तान, हमर
भगवाने छथि निर्माता ।
हमर ममत्व भूमि केँ, हम सन्तति
ओ छथि भू माता ॥

रूप विरूप कहओ क्यो, युग अनुरूप
न मानओ, क्षति नहि ।

किन्तु स्वरूप हमर अविकृत
युग सँ युग धरि, अनुकृत नहि ॥

साल विशाल गुल्म भेषज
फल - दल अनन्त भंडार ।
भरल-पुरल वांछित, न नियोजन-
लांछित घर - परिवार ॥

शांत निरन्त हमर अन्तर,
जत वैर न द्वेष न लेश ।
विबिधता क बीच एकता क नित
भेटइछ जत सन्देश ॥

तरु सन्तति कें नहि कटाय
ककरहु विशाल - उद्देश ।
प्रकृत जीवन क संजीवन हम,
हमर अहम् वन देश ॥

पूजन : उपादान

धरती ताप जगाय अहीं
भाफें घन सघन बनौलहुँ,
सरस हृदय कय द्रवण - प्रवण
जीवन कें सहज सजौलहुँ,
दूर गगन संचरणशील
कल्पना - समीर बहौलहु,।
जगती हित नित यदि च अपन
कन - कन जीवन बरिसवितहुँ !
ताही सँ हे देव ! अहँक
पद - पंकज पाद्य चढ़बितहुँ !!

कंठ-कंबु मे भरि - भरि स्वर-जल
व्यंजन - बिन्दु क संचय,
नयन क अर्घी मे अति तरल
सलिल रस कन - कन भरि कय,
स्वेद - बिन्दु सात्विकता भावित
अङ्ग -अङ्ग उद्‌गत लय।
दलित - व्यथित कें देखि - देखि
उर द्रवित भाव उमड़बितहुँ !
ताही सँ हे देव ! अहाँ क
चरण दिस अर्घ्य बढ़वितहुँ !!

गंधवतो धरती क समस्त
सुरभि गुण अणु - अणु संचित,
सलिलक क रस लय, पवन परस दय
विबिध रूप रस व्यंजित,
तरु-तरु गेल्ह लतावलि झुकि - झुकि
वृन्तें झरि - झरि रंजित।

फूल क हँसिएँ मुकुलित मन मे
नवल विकास जगबितहुँ !
ताही सँ हे देवि ! अहँक उर
पुष्प - हार पहिरवितहुँ !

अगुरु उर क अति शुष्क
भाव चन्दन लय मलय पुराने;
नागरता क कणा धूमिल
धूप क स्तुति शुष्क समाने
गद्‌गद स्वर गुग्गुल द्रव-द्रव्यक
पंच सुगन्ध विधाने।

अनपेक्षितहुँ उपेक्षित हृदय क
आशा गन्ध उड़बितहुँ
ताहि सँ हे देव ! अहाँ के
सुरभित - धूपित करितहुँ !

नूतन वातावरण पुरातन
धरती पर उपजाबी,
मूल क मूल्य, कन्द आनन्दक
फल परिणाम रचावी,
वन उपवन मे तरु-तरु तृण - तृण
नव रस स्वाद बढ़ावी।

नित नूतन रसज्ञ रसना हित
नव रस स्ववश चढ़बितहुँ !
ताही सँ हे देव ! निवेदन
नैबेद्य क हम करितहुँ ।।

अहीं माटि कें सानि सलिल सँ
वात्या - चक्र घुमौलहुँ,
राग - आगि सँ सुखा - पका
अवकाश अकाश बसौलहुँ,
स्नेह दान कय जीवन - बाती
दय दीपिका सजौलहुँ !

यदि च दलित उर अन्धकार मे
आश इजोत जगबितहुँ !
ताही सँ हे देव ! अहँक
मन्दिर आरती अजबितहुँ ।।

पर्वत : एक वृद्ध

दप-दप हिमहिक पाग माथ पर,
कान्हहु निर्झर चादरि ।
तन पर चपकन पहिरि तरु-गन क
तानल छाता बादरि ॥
साल विशाल फराठी कर मे
चलब कठिन, तेँ अचले ।
बट्टुआ कटि लटकाय गुफाहिक
गुआ धातु कत गचले ॥
सर -- सरि ससरि नहाथि कोनहुना
फल , दल तोड़थि निचले ।
घाटी - घाटी नहु नहु कहुखन
सम्हरि चलथि पथ बिचले ॥
कखनहु मन प्रसन्न खेलबथि कत
मृग - शावक समुदाय ।
हरित - भरित तृण - लता - गुल्म
फल - दल सन्देश सजाय ॥
खन तमसाथि गरजि पशु हिंस्र
बाघ - सिंह क हुंकार ।
जे फनैत दल चढय न मस्तक
तेँ उचित दुत्कार ॥

खनहु विहंगम स्वर - संगम सँ
गुन - गुन गान गबैत ।
मन हरैत छथि, गुन भरैत छथि,
नीतिक श्लोक पढ़ैत ॥

अनुभव रतन जोगाय, योग्य
जन कें कत जतन सुझाय ।
दिव्य औषधि क, मणि धातु क
जत परिचय दैछ बुझाय ॥

कमा' — कमा' निज शिला अंग
सब - घर परिवार बसावय ।
खोजी आरोही शिष्यहु कें
शिखर विचार चढाय ॥

तन कठोर पाहन, जत जगतक
झाँट - बिहारि सहैछ ।
हिम - कोमल मन देखि
जगत तापित, दृग द्रवित वहैछ ॥

वृद्ध वयस रहितहुँ, हिम सहितहुँ,
गलितहुँ जगहित हेतु ।
दया - द्रवित चित, झरि उर - निर्झर
सरस करथि नित खेत ॥

नमन करिअ, अनुगमन करिअ,
परिकरमा श्रद्धा — गाढ !
पर्वत वृद्ध अहींक समृद्धिक
चिन्तन करइत ठाढ ॥

पर्वत : एक युवक

के ई उद्धत उन्मत यौवन
उद्‌गत उन्नत भाल ?
सर्वोपरि बढबाक महत्त्वा—
कांक्षा जनि उत्ताल !!

जननि अतल पाताल, ज्वार उर
धधकि ललकि भू - गर्भ ।
चीरि धरातल, उठले जाइछ
करइत कत संघर्ष ॥

पड़इछ किरण प्रखर उत्तप्त
तपन तपइत कत घोर ।
घन गर्जन - तर्जन नहि गनइत,
वज्र - चोट नहि ओट ॥

हिम निपात सहइछ नित,
चित्त न चंचल चन्द्र वितान ।
शीत - ताप - वर्षा प्रपात,
रखि-बिरखि झुकय नहि मान ॥

... ...

यदि च देश - सीमा पर
पड़इछ माथ सुरक्षा भार।
सहि कत - कत आघात
न रिपुकें करय दैछ संचार॥

यदि च देश-हित कृषि-संपत्ति क
देख - रेख दायित्व।
कत श्रम घमि, झरि स्वेदनिर्झरें
पटवय पटु स्थायित्व॥

यदि च धातु - मणि - रत्नें
पूरित हो करबाक उदेश।
युग - संचित खनिजहु खुनि - खुनि
करइछ सम्पन्न स्वदेश॥

वन सम्पदा बिशाल, पालनो
पशु क चरी क प्रबन्ध।
गिरि - गुरु युवा जुड़ओ युगजीवी
नेता कर्म निबन्ध॥

... ...

कन - कन माटि बालु उघइत
भरइत कत खंदक खाधि॥
पाथर थुरइत वन जंगलहु
लगबइत विविध उपाधि॥

करइछ युग - युग सँ उपभोग-
योग्य सामग्री पूर ॥
जय-जय श्रमिक ! धातु खनि खनइत
घमइत अथ च मजूर ॥
खेत - पथार बाँध वन सघन
पटबइत निर्झर स्रोत ।
जय किसान उपजबइत कत विध
अन्न - धान मणि - मोति ॥

... ...

यदि कखनहु रण - भेरी बजइछ
सजइछ वेष जवान ।
गुहा व्यूह कत गूढ विरचि
गचि घाटी रण सामान ॥
हिम उष्णीष शीर्ष पर, पहिरल
उपत्यका पदत्राण ।
कवच सघन वन, हाथ साल
बन्दूक तानि मयदान
युगजीवी अभिमानी मानी
पर्वत देश क प्राण ।
जय गिरिपति ! जय सीमापति
जय - जय हिमवान जवान !!

पर्वत : एक बालक

हरित - भरित चंचल वन अंचल
चारू कात पसारि।
कोर उठाय गोर शिशु
अवनी जननी रहलि दुलारि॥
मुख उज्ज्वल, अम्बर उच्छल,
जनि भालो भाग्य विशाल।
प्रकृति जननि उर द्रवित दुग्ध
हिम पिवइछ ललकि रसाल॥
नगन, मगन मन, सतत दिगम्बर
दिग धवलित मुसुकान।
हाथ उठाय चहै छथि पकड़य,
दूर न मामा चान॥
धातु-रतन कय जतन जोगाबय
खेल खेलौनो ढेर।
सुधि - बुधि बिसरि अचेतन, चेतन
रितल बितल कत बेर॥
खेलइत कखनहुँ गुड़रि उठै छथि
बाघ सिंह होहकारि॥
खनहु वन - बिहग कल धुनि सीटी
बजबथि मधुर सम्हारि॥

अगर - डगर घाटी - परिपाटी
घुमथि, रेङथि कत ढंग ।
गुफा तुकाथि, कुदथि फुर-फुर
पुनि निर्झर झरना संग ॥

तट - तराइ मे करथि चराइ
धेनु धन अगनित संग ।
गाछ लता लय गुल्ली - डंडा
माँजथि - भुजथि उमंग ॥

आँकड़ - पाथर केर पथार
लगबैछ हाट कत मेल ।
शिशु पर्वत क केहन शैशव शुचि
रुचि मत देखिअ खेल ॥

दौड़ - धूप कय थाकि पानि पिबइछ
पुनि झरना कात ।
फल-दल तोड़ि, ओज वन-भोजन
परसल दोना पात ॥

अवनी जननी कोर सजाबथु
अपन वंशधर मानि ।
नाम महीधर चिरजीवी, पर्वत
महि गर्वक हानि ॥

प्रतिमा : भावना

ककरहु संकल्प केर मूर्त आकार।
सृष्टि बीच आबि स्वयं स्रष्टा साकार।
कविक हृदय कल्पना क कविता नव मूर्ति।
गगन वाष्प पवन सघन सरिता थिक पूर्ति॥

मन क सौन्दर्य निखर प्रतिमा छविवंत।
राम क पद - रज क परस पाहन जीवंत॥
ज्ञान निराकार साकार भक्ति हेतु।
तुनुक तनु क प्राण परिष्कार शक्ति केतु॥

अणु क शक्ति दृश्य तखन जखन धातु-धूलि।
ध्यान जमय जतय बिन्दु ज्योति सिन्धु घूलि॥
प्रमा प्रमाण आगम-अनुमान यदि च दृश्य।
गुरु क हो गुरुत्व सिद्ध जखन सफल शिष्य॥

ककरहु हस्ती क बुतपरस्ती परिणाम।
काबा कबूल करय सीमित लय स्थान॥

मूर्ति-भंजना क योजना क अभियान।
बन्द करिअ, मन्दिरहु क अन्दर भगवान॥

व्यक्ति एक, नाम कते, लौकिक अनुबन्ध।
पिता-पुत्र भाइ-बन्धु बहुविध सम्वन्ध॥

रहितहुँ अदृश्य, दृश्य कर्म तडित शक्ति।
बरय-बहय, भरय-बुनय कते बिधि प्रसक्ति॥

चित्र ई विचित्र भरल भावना पवित्र।
प्रतिमा खनि अमृत स्रोत बुनत मन खनित्र॥

ज्योति लिंग भूमि गड़ल बढल गगन शृंग।
कीट विकट जन्तु रङल रङ्ग कृष्ण भृङ्ग॥

मूर्ति पूर्ति भावना क बुझवे परिणाम॥
प्रतिमा प्रमाणित प्रतीक प्रेम प्राण॥

मूर्ति पूर्ति भावना क कल्पनानुसार।
निराकार प्रभुहिक संसार ई अकार॥

धूमावती

धयल षोडशी श्यामा सुषमा धामा अपन नयान।
कयल त्रिपुर-सुन्दरी नयन- अभिरामा अनुखन ध्यान॥
कर - कमला कोमल कमला कय हृदय-कमल सन्धान।
तारिणि तारा- तरल द्वितीया दिस टकटकी निदान॥

छली शारदा हमर उपास्या वीणा पुस्तक संग।
स्मितमुखि गीत कवित संगीत ललित लय भरथि उमंग॥
अथवा मदिरारुण - नयना मधु-वयना छवि छविवंति।
घर-आङन चानन छिटकाबथि भरथि सुरभि रसवंति॥

किन्तु नियत छल, उचरल मंत्र अदृष्ट, दृष्ट परिणाम!
इष्ट बनलि अयली घर हमर अदृष्ट देवता वाम!!
धूमावती सती, वयसा वरिष्ठ, बचसा कटु क्लिष्ट।
रूप विरूपा, प्रकृति अनूपा, कृतिहु विकृत, नहि शिष्ट॥

मलिन वसन घर-द्वारि बहारथि बाढ़नि हाथहि नित्य।
जेना कोनो आयलि छथि वेतन-भोगिनि कोनहु भृत्य॥

सूप हाथ किछु-किछु सदिखन फटकैत अन्न भरिपूर ।
बिच-बिच गुन-गुन सोहर-लगनी गबइत बिनु धुनि सूर ॥

शय्या-गृह सँ भनसा-घर जनिका रुचि बढ़ल विशेष ।
जे पड़ोसिनि क बात पुछै छथि,खबरि न देश-विदेश ॥

ज्ञान जनिक बच्चा-जच्चा धरि ध्यानो घरे - कुटुम्ब ।
अक्षर जनिक गोस्वाञ्नि नाञ्नो धरि पोथी पतरा लम्ब ॥

मन छल विमन,कोना खन काटव बिरुचि, न रुचि विज्ञान
दृगक पियास मेटैत कोना ? ताकल भगवति-भगवान ॥

देखल अहा ! भगवती ! धूमावती निरूपित रूप !
स्वयं महाविद्या परतच्छे तन-मन सबहु अनूप !
स्वर्ण-अन्नसँ भरल सूप, बाढनि स्वच्छता प्रतीक ।
श्रम क स्वास्थ्य-सौन्दर्य दिव्य आन्तरिक रूप रुचि लीक ॥

पुनि छलि लगहिं छिन्नमस्ता करइत जे नव संकेत ।
छिन्न अपन मस्तक कय उर-रुधिरहु दय भरी निकेत ॥
विदित महाविद्या धूमावति हमर देवता इष्ट !
धन्य जीवनक क्षण,क्षणभरि यदि दर्शन पुरल अभीष्ट !!

श्यामा उमा अन्नपूर्णा सभ एतय समन्वित रूप ।
धन्य कयल अनुरक्त भक्त के, जयतु देवि अनुरूप ॥

भिक्षा-पात्र

ई न कोनो दग्ध-उदर कर मे अछि रिक्त,
ई न कोनो दक्षिणा क मन्त्रें अभिषिक्त,
ई न कोनो कामना क संचय अतिरिक्त,
तिक्त मुखें जकरा प्रति भृकुटि तानि लेब।
दान – दक्षिणा प्रयुक्त सुकृति मानि लेब॥

ई न कवच-कुण्डल केर छली वज्रपाणि,
बलि क बन्धनी न लेब वामनी प्रमाणि,
ई न शिवि क जाँच ले' कपोत - बाज बानि,
जकरा दिस शंकाकुल दृष्टि तानि लेब।
राजनीति रीति कोनो तुष्टि मानि लेब॥

भूमि - हीन भूमि - पुत्र कोना सहल जाय ?
धनी धन्य कोना जखन भूख बढल जाय!
श्रमें मूल; पत्र - फूल सम्पदा सहाय,
कोना तखन श्रमिक श्रमण श्रद्धा फल लेब।
अपन भूमि रतन यदि न भाजन भरि देब॥

'कस्य स्विद्धनं' सदा सुनी प्रमाण वेद,
'सवै गोपाल-भूमि' एतय घोषणा अभेद,
'न दुःखभागि क्यौ कदापि' तोषणा अखेद,
दुर्ग तरओ, सर्व सुखी, गर्व तकर लेब।
मानवीय स्वर्ग नवे, याचना तदेव॥

व्यक्ति सँ समाज, तेँ समाज हेतु व्यक्ति,
समाज शक्ति व्यक्ति, तेँ न व्यक्ति सँ विरक्ति,
एक दोसराक पूर के निके प्रसक्ति,
तेँ समष्टि-व्यष्टि योजना प्रमाणि लेब।
दान ई निदान समाधान मानि लेब॥

ई न वर्ग-मूल शूल-हस्त्त क्रान्ति रक्त,
ई न द्वन्द्व - मूल भौतिकी क अन्ध भक्त,
ई न सर्व-हरी सर्व-हरा दल विभक्त,
क्रान्ति गर्त, क्रान्ति पर्त दुहू मेटा देब।
महाभारतेक शान्ति - पर्व जुटा लेब॥

क्रान्ति शान्ति हेतु, भ्रान्ति ज्ञान हेतुएँ,
व्याधि ओ उपाधि सह्य स्वास्थ्य हेतुएँ,
जेठ तपय जते हेंठ मेघ वृष्टिएँ,
प्रलय एतय विदित, नवल सृष्टि हेतुएँ,
नवा पुरातनी, सनातनी पुनर्नवा,
नवीनता पुरातनी सनातनी नवा,
दिवा तपी, निशा शशी; सुखाय वा दुखाय
किन्तु ई उषा - प्रदोष अन्विता नवा॥

भीख ई न थीक मात्र दीनताक हेतु,
लीख ई न थीक मात्र नीति सिन्धु सेतु,
सीख ई न थीक मात्र प्रीति - कीर्ति केतु,
सहज मनुजताक कर्म मर्म जानि लेब।
महज दनुजताक भेद वर्ग मानि लेब॥

सत्य सूर्य : वयसपूर्ण

बयस अतीत तीत रहितहुँ
स्मृति - पाक पागि भेल मीठ ।
बुझि पड़इछ रसाल - रस चूसल
शेष वयस भेल सीठ ॥
अङ्कुल, बङ्कुल, दल फूटल दुइ,
मुकुलित पुलकित देह ।
सिंचित करइत श्रम-जल मालिनि
प्राण पुरल भरि नेह ॥
दल किसलय नव मुकुल मृदुल
दृग मोहय कुसुमक वृन्त ।
सौरभ श्वास - श्वास उभड़य
सुरभित कय, दिशा - दिगन्त ॥
ने आतप क तपन, ने पावस-
पवन बहय पुर - जोर ।
मुकुलिततन,विकसितमन, विहँसय
शरद साँझ मधु भोर ॥
आशा - दीप अखण्ड बरैछ,
मन क मन्दिर आलोक ।
ने जगत क झंझा-जंजाल के
झोंक, न चिन्ता - शोक ॥

वयस-सन्धि सन्ध्या क क्षितिज पर
  रेखा उदित उदार ।
छिटकि चटुल चन्द्रिका चमकि
  जगमगा देल संसार ॥

नयन चकोर चान मुख निरखय
  तृषा शमित नहि भेल ।
'जनम अवधि हम रूप निहारल
  नयन न तिरपित भेल' ॥

मधुमय मधु - यामिनी, कामिनी
  सङ्ग रभस - रस रङ्ग ।
जागि गमाओल, प्यास रस क
  न मिझाओल निमजि तरंग ॥

कत हवि हविस चढ़ाय मन क
  अगिनि क नहि मेटल भूख ।
कतवहु नदी नहायल तदपि
  रहल मन रूख क रूख ॥

स्पृहा-नखत कत हृदय-गगन बिच
  झिलमिल झलफल जोति ।
मिझा रहल, किछु वुझा रहल
  टुटइत मन मानिक - मोति

... ...

देखिअ प्राची दिशा - रेत पर
बहय प्रभाती स्रोत ।
अमल कमल अरुणिम रस उछलल
अलि - दल पड़ि गेल नोत ॥
उन्मद उड़ि-उड़ि अलिकुल घुरि फिरि
पल-पल सेवल आबि ।
कते सुनाओल गीत प्रीत - रस
गुन - गुन नव धुनि गाबि ।
नव प्रभात जीवनक वन क छल
नव - ऋतु वयस वसन्त ॥
सौरभ सुमन रूप रस बाँटल
द्रुम - वल्ली रसवन्त ।
चढल दिवस, रविकर-निकर क तिख
तपस बढल दिनमान ।
जीवन ज्वलित शिखा दगधल
कामना शलभ उपमान ॥
कटु कठोर संघर्ष जीवन क
घोर, न कोमल भाव ।
आब प्रभाव रखैछ, बहैछ
जखन मरु वायु - अभाव ।
रस प्रभाव मे दाह, मलय मे लय
सुरभि क भय गेल !

Scanned by CamScanner

पिअरायल मुख, नुका चान कत ?
  उडुगन कहुँ चलि देल ?
अली गली मे जाय नुकायल
  कली - कली निस्तत्त्व ।
कण्ठ कोकिल क बझल बिझायल
  पंचम स्वर पंचत्व ॥
अशन-वसन सबहु क अकाल अछि,
  न पुनि स्वर्ग - अपवर्ग ।
नरक नर क हित प्रस्तुत करइछ
  शोषक शोषित वर्ग ॥
ज्ञान विना प्रज्ञा क ज्ञापित
  संहारक विज्ञान ।
सत्य अहिंसा शान्ति शब्दगत,
  अर्थं अनर्थं प्रमाण ॥
विश्व विभाजित देश - देश मे
  देशहु खण्ड प्रखण्ड ।
अणु - परमाणु बनाय भूमि कें
  शून्य गगन उद्दण्ड ॥
कतहु योग भोगाय स्वाहा
  कतहु भोग योगाय ।
कतहु श्रेय लय गेल प्रेय दबि,
  श्रेयहु प्रेय बिलाय ॥

विषम परिस्थिसि मे स्थिति समता,
चाहय जर्जर विश्व ।
आइ तकर हित तप'क हैत
नहि क्यौ जनमहि सँ निःस्व ॥
जा धरि नहि उपभोग - योग्य
दुर्बल दुर्गत संसार ।
ता धरि भोग न योग्य,
योगहि क व्यक्ति-व्यक्ति संचार ॥
कर्मठ तपी तपन गगन क
कुटीर बिच साधक धीर ।
तपथि आतपेँ वितरथि ज्योति
जगत नहि विरमथि वीर ॥
सत्य सूर्य कर्तव्य क तपइछ,
नहि छन कतहु विराम ॥
घोषित तथ्य श्रमे विश्राम,
अलस आराम हराम ॥
सत्य सूर्य अछि उपर, अधर पुनि
वयस पूर्य तुलि गेल ।
गगन गनित युग-युग क कल्पना
वस्तु-निष्ठ जनि भेल ॥

नटी : वधूटी

चंचल अंचल ओम्हर,
एम्हर उर भरले तरल सिनेह ।
नगर - डगर मे सोर ओतय,
सुर मंजु विपंची गेह ॥

एक क छवि छापल जाइछ
खबरि क कागज सत रंग ।
छपित छुपित बेसुधि पुनि क्यौ
गृह - कारज सीमित अंग ॥

रजत - पट क शोभा छायामयि
छलना क्यौ उतरोल ।
नील पट क घोघट ओटहि पुनि
ललना, सुनी न बोल ॥

सहस-सहस दृग - सागर चपल
तरंग क झंपन लैछ ।
दूरहु नयनक कोनहु कोनहु
निरखि उर कम्पन हौछ ॥

छुनक विकच कचनार वयस
रस-कानन जन अलि पुंज ।
छिनक सुरभि मंजरि तुलसि क
पूषित विच आकच - कुंच ॥

बन-वन कुसुम कुसुम मधु उन्मद
मधुकरी क झंकार।
आम क आङ्न पिकी वसंत-वधूक
स्वर क सत्कार ॥

रती काम - वामा उद्दामा
जत तत मुक्ता मोल।
सती अनामा पति - सतभामा
संचित निधि क अमोल ॥

राजनीति मत कूट कपट उत
अह - निस अस्त - व्यस्त।
शूद्ध संस्कृति क मणि क ज्योति
नित उदित न इत पुनि अस्त ॥

ओम्हर चंचला चपला चमकय
घन घमंड नभ छापि।
दृग चौंकाय, खसाय वज्र,
जग दैछ तिमिर पुनि चापि ॥

एम्हर उदित जे निर्मल शीतल रेखा क्षितिज क छोर।
करइछ हीतल शीतल जगती चन्द्रिका क शुचि कोर ॥
लहरि लेव सागर क खार जल उच्छल नीलम नीर।
ज्वार - भाट उठ-बैठ कर्ते घुस-पैठ सहब बसि तीर ॥
अथवा गंगा-धार नहायव ? शुचि-रुचि उषा प्रभात।
बिन्दु-बिन्दु आचमन तृषित चित स्नातक ! पुलकित गात

सम : विषम

[तुलनात्मक बरहमासा]

मधु निकुञ्ज मे जाउ अहाँ,
  फागुन क फाग धुनि गाउ।
रंगिनि संगिनि संग अंग रुचि
  रंग अबीर लगाउ॥

हमरा चैत चेताबय चित चढि,
  चर - चाँचर चलि जाउ।
खेत क मोती दाना चुनि-चुनि
  घर - खरिहान सजाउ॥

अहँक विशाखा सखी सिखाबय
  राधा बाधा दाह!
हरि सकबे हरि! विरमि-बिलमि
  वन विजन सघन तरु छाँह॥

हमर जेठ तपि हठि वर्षा हित
  कहय, तपिस तपि आउ।
श्रम - बिन्दु क संचय करइत, घन
  गगन स्वयं उमड़ाउ॥

अहँ क अषाढ़ प्रथम दिवसहि मे
असह विरह – अभिभूत ।
अभिशापित अचेत गिरि-शिखरहि
पठबय मेघ क दूत ।।

घन श्याम क आगमन आकनहि,
वन - वन विकच कदम्ब ।
साओन हमर सोहागिन सजबय
केश - वेश घन लम्ब ।।

नित्य सहज संयोग, धरणि--
अम्बर अछि एकाकार ।
हरित - भरित बसुधा दृग अंचल
प्रकृति क सुचिर सिङार ।।

'ई भर बादर भादर' अहँ क
गबैछ 'दुख क नहि ओर' ।
हमर सहज आसिन आशा लय
पोछय आँखि क नोर ।।

कातिक बातिक कन्त जराबय
घर भरि अहँ क इजोत ।
किन्तु तेरहम वितइछ घर-घर
ककरहु ई न इरोत ।।

अगहन गहन हमर अन-धन
। जे भरय खेत - खरिहान ।
निर्भर हर्षक वर्ष जाहि पर,
।। भरि सब तरि धन - धान ।।

पूस हूस अछि तूस - तुराइ
। बिना हिम - राति कटैत ।
जाड़ - ठाड़ गड़इछ जन-परिजन
।। अहँ क पुसौठ अछैत ।।

सीर - पंचमी माघ जोत जत
। हमर किसानी ठाठ ।
हर-फार क चालन, संचालन
।। वेद विप्र घन - पाठ ।।

माघक श्री पंचमी हमर
। दिग् देश वसन्त सजैत ।
अहँ क पुरें अछि रंग - रभस
।। पुनि फागु क राग रचैत ।।

फाग राग रुचि अहँ क
। हमर शुचि चेतावरि क प्रसंग ।
कोना तखन समगम सरिगम धुनि
।। विषम दुहु क रुचि - रंग ।।

खण्ड : अखण्ड

तों गिरि कें अणु, अणु कें पुनि
परमाणु, तकर पुनि खण्ड - प्रखण्ड ।
बनवह गिरि कें शिला, शैल कें
कंकड़, सैकत - कण शत - खण्ड ॥

तोहरा छह बल विज्ञान क
विस्फोटक त्रोटक ध्वंस क हन्त !
द्रवित द्रव्य कें करह वाष्पमय
अग्नि क दाह प्रवाह अनन्त ॥

हम गढ़इत छी प्रतिमा धूलि माटि—
कण कें कय सलिल क सेक ।
जे जत बिखड़ल शत सहस्र कण,
कय तनि संहत संगत एक ।

विश्लेषण कें संश्लेषण मे
परिणत करब हमर संकल्प ।
भूमि क लघिमा कें भूमा मे
बदलि अल्प कें करी अनल्प ॥

वाक्य हमर ऐकिक आरम्भिक
तोहरा पद - खण्डक आवेश ।

तों प्रदेश के देश कहह,
हम विश्वहि के कुटुम्ब परिवेश ॥

विश्वनाथ वा जगन्नाथ व्यापक विभु
विष्णु विराट महान ।
हमर देवता सहस नाम रहितहुँ
कखनहुँ न गनित अभिधान ॥

तोहर दिव्यता बाष्प-द्रव्यमय,
जडमय सीमित कक्ष समक्ष ।
जकर लक्ष्य नरता वानरता
मानबता' नवता प्रत्यक्ष ॥

हम अपवर्ग क पथ क पथिक,
तों वर्ग - वर्ग मे बाँटह स्वर्ग ।
नर मात्रहि के नारायण बनबी
तों नरक नर क संवर्ग ॥

लघुतम तोहर गणित अगणित
नित हमर महत्तम कलना एक ।
भिन्न ब्यकलन क बनह हिसाबी,
ऐकिक नियम एम्हर अछि टेक ॥

भाषा प्राकृत -- विकृत विभाषा,
अनुसृत संस्कृति प्रकृति क मूल ।

हम पद मूलक विदित उपासक;
तों शीर्षकहि क पकड़ह चूल ।।

गगन अनन्त नखत कन गनइत
तों संख्यानक विज्ञ विशेष ।
हम धरा क आख्यानहि बुझलहुँ
शेष क शय्याश्रयी अशेष ।।

'अणोरणीयान्' बुझले — गमले,
तदपि महीयान् अन्तिम तत्त्व !
भूमा सुख, तें मृत सँ अमृत
असत् सँ सत, लघु सँ पूर्णत्व ।।

कतबहु खण्ड क बनह विभाजक,
भाग - भाग मे विभजन - व्यग्र ।
हम अखण्ड ऐक्य क संकेतक
एक निकेतन कलित समग्र ।।

'भूमा वै सुख' हमर सुख क सीमा
असीम अछि ज्ञान अनन्त ।
तोहर खण्डनक खण्ड न कय सकत
अखण्ड कें खण्डित अन्त ।।

विडम्बना

जे शूल पर झुलइछ तनिक पद, फूल अहँ कि चढ़ायबे ?
जे मूल के रचइछ स्वयम् तनि चूल अहँ कि सजायबे।

जे वज्रभुज करवाल भँजइछ, तनि कनक -- केयूर की ?
जे गिरि - शिखर अभ्यस्त पद; रथ उपर तनि न चढ़ायबे ॥

ज्वल अनलज्वाला जनि नयन, सुरमा न चसमा तनि रुचिर।
जे शर - निकर उर पर सहथि तनि हित न हार गढ़ायबे ॥

जे कंटकित मुकुट क विकट भट, स्तबक कुसुमक स्तुति न तनि।
जे गिरि क निर्झर जल पिपासु, न कूप-जल भरि लायबे ॥

जे सागर क उत्ताल लहरि विशाल तरइछ वितत - भुज।
पुनि तनिक क्रीडा - केलि हित गृह-वापिका न खुनायबे ॥

जे मुक्त प्रकृति क कानन क संचरण - पटु पंचानने।
तनि घेर - बेढ़ क हेतु पुनि पिंजर न हन्त रचायबे ॥

जनि राजभवन क शयन, रानि क नयन, शिशु बयनहु रुचिर।
निष्क्रमण रोध न कय सकल, अनुरोध तनि न जनायबे।

जे पाशुपत उपलब्धि हित छथि पशुपति क संधान मे।
तिव रूपसी छवि उर्वशी तनि आगु व्यर्थ नचायबे।।

जे महाभारत समर उत्कट शान्त चित गीता रचथि।
तनि सान्त्वना मे गुनगुना रस-गीत धुनि की गायबे ?

जनि भृकुटि तनितहि क्षुब्ध सागर शान्त, सेतु निबन्धने।
तनि सन्तरण हित काठ एकठा नाओ अकठ चलायबे !!

जे धूलि अणु - परमाणु गढइछ शक्ति - स्रोत परम्परा !
तनि श्रम पुरस्कृत कर'क हित अहँ कनक-कन कि गनायबे।।

जे अन्तरिक्ष-परीक्षण क हित ग्रह-गनक भ्रमन क रसी।
तनि श्रम हरण हित विश्रम क तृण-छाउनी न छरायबे।।

जे स्वयं कुसुमाकर सजथि मधु - माधवी वीथी प्रथित -
तनिका दनूफ क फूल विछि डाली कि आगु बढ़ायबे !

जे घन क धुनि रस-सजल साओम- भादवक सजइछ घटा।
पद-बिन्दु अनुपद सिंचना तनि पथ न हन्त ! पटायबे।।

द्वैत - गीत

भरि दी स्वर अहाँ, हम तँ मात्र व्यञ्जना।
रेख - लेख हमर, अहिंक कला रञ्जना ॥

[१]

चरण हमर, गति अहाँक
शब्द सहज, अर्थ बाँक,
पद-बितान हमर, अहँक छन्द - बन्धना।

[२]

शक्ति अहँक, भुजा हमर,
भक्ति हमर, पुजा अहँक,
प्रतिमा क प्राण अहँक, हमर वन्दना ॥

[३]

तरु क उगव मात्र कर्म,
फड़व - फुलब ऋतु क धर्म,
वन—उपवन रस जगैब मधु क योजना ॥

[४]

भूतल केँ तपन ताप,
हृदय रस क बनब भाफ,
उभड़ि—घुमड़ि बरिसब ई वन क घोषणा।
भरि दो स्वर अहाँ, हमतँ मात्र व्यञ्जना ॥

'सुमन'—साहित्य

प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन'– रचित काव्य-ग्रन्थ

अर्चना	२.५०	प्रतिपदा	५.००
अङ्कावली	६.००	पयस्विनी	५.००
अनुगीताञ्जलि	८.००	प्रकृति-शतक	३.५०
अन्योक्तिका	३.५०	प्रकीर्ण-शतक	[illegible]
अन्तर्नाद	५.००	भारतवन्दना	२.००
अलङ्कार-मालिका	५.००	मुक्तावली	२.००
आनन्दलहरी	१.५०	ललना-लहरी	[illegible]
उत्तरा	५.००	भक्तिस्तबक	१.५०
ऋतुशृङ्गार	५.००	शिवमहिम्न [illegible]	१.५०
कथाभूषिका	३.५०	शृङ्गारहार	३.५०
कविनवतिका	४.००	सौन्दर्य-लहरी	६.००
किरातार्जुनीय ३ सर्ग	२.००	श्रावण-भादव	३.५०
ग्राम-धरती	५.५०	सनेस	१.५०
चण्डीचर्या	३.००	हरिस्मरणिका	१.५०
जनरा चारुधाम	४.५०	हितोपदेशिका	१.७५
पुत्रोऽहं पृथिव्याः	३.५०	हनुमान बाहुक	६.००
गीतिका	२.००	नीतिका	२.००

सम्पादित ग्रन्थ

गोविन्दगीताञ्जलि	६.००	पुरुष-परीक्षा	१५.००
वर्णरत्नाकर	५.००	[illegible]	१०.००
आनन्दविजय नाटिका	३.००	कृष्ण जन्म	२.००
पारिजातहरण ,,	२.५०	रघुवंश [illegible] सर्ग	२.५०
मैथिली रामायण संक्षेपिका	४.५०	कथामञ्जरी कथासाहित्य	२.००
[illegible] ,, ,,	६.००	[illegible] साहित्य	३.००
[illegible]	३.५०	[illegible]	२.५०

प्रकाश्यमान

[illegible] महाकाव्य	२५.००	कुमारसम्भव	२०.००

प्रकाशक—मैथिली मन्दिर, राजकुमारगंज, दरभङ्गा
मुद्रक – मिथिला प्रेस, राजकुमारगंज, दरभङ्गा।